बौद्धकालीन शासन–व्यवस्था : एक संक्षिप्त अवलोकन

डॉ0 रेणु बाला

प्रस्तुत शोधपत्र बौद्धकालीन शासन–व्यवस्था में राजा, अमात्य, कोषाध्यक्ष सहित राज्य की शासन की समस्त विधाओं की चर्चा की गयी है। साथ ही राज्य की न्याय व्यवस्था और सख्त दंड़ व्यवस्था को भी दर्शाने का छोटा प्रयास है। प्राचीन शासन व्यवस्था में विधि अथवा न्याय को धर्म का ही अभिन्न अंग माना गया था। अतः न्याय अनुपालन में नैतिकता पर सर्वाधिक बल दिया जाना स्वाभाविक था। प्राचीन काल में राजा को ईश्वर का अंश माने जाने के कारण उसके द्वारा दिये गये आदेश को ईश्वरीय इच्छा मानकर उसका पालन किया जाता था।